# ईएसआइसी के अस्पताल भी चाक चौबंद

**तैयारी** ▶ देश भर में इन हॉस्पिटलों में 2200 आइसोलेशन और 1200 क्वारंटाइन बेड उपलब्ध

## बीमित कर्मचारियों का सामान्य इलाज अनुबंधित अस्पतालों में होगा

जागरण ब्यूरो नई दिल्ली

कोरोना को हराने के प्रयासों में सभी सरकारी विभाग व संस्थान अपने-अपने हिसाब से योगदान दे रहे हैं। इस कड़ी में कर्मचारी बीमा निगम (ईएसआइसी) के अस्पतालों ने भी अपनी तैयारियां चाक-चौबंद कर ली हैं। ईएसआइ कारपोरेशन के देश भर में फैले अस्पतालों ने अब तक लगभग 2200 आइसोलेशन बेड और 1200 क्वारंटाइन बेड तैयार कर उपलब्ध करा दिए हैं। इतना ही नहीं, ईएसआइसी के फरीदाबाद स्थित अस्पताल में कोविड-19 की जांच के लिए टेस्टिंग लैब भी स्थापित कर दी गई है।

ईएसआइसी प्रवक्ता के अनुसार कोरोना को काबू करने के लिए ईएसआइसी ने सरकार के प्रयासों में सहभागी बनते हुए देश के विभिन्न शहरों में स्थित अपने अस्पतालों में कुल मिलाकर 2154 आइसोलेशन बेड तैयार कर उपलब्ध करा दिए हैं। इनमें से कोरोना के इलाज के लिए विशेष रूप से समर्पित आठ अस्पतालों के 1042 बेड शामिल हैं। सबसे ज्यादा 470 बेड जोका (बंगाल) के ईएसआइसी अस्पताल में तैयार किए गए हैं।

इसके अलावा 100 बेड अंकलेश्वर (गुजरात), 100 बेड (वापी) गुजरात, 100 बेड उदयपुर (राजस्थान), 100 बड बद्दी (हिमाचल प्रदेश) 80 बेड गुरुग्राम (हरियाणा), 50 बेड जम्मू और 42 बेड आदित्यपुर झारखंड में उपलब्ध कराए गए हैं। कोरोना वायरस के पीड़ितों के इलाज के लिए समर्पित आइसोलेशन बेड के अलावा ईएसआइसी के अन्य सामान्य अस्पतालों में भी 1112 आइसोलेशन बेड तैयार कर दिए गए हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराया जाएगा।

**राजस्थान में है सबसे ज्यादा क्वारंटाइन बेड** : इसके अतिरिक्त 197 वेंटीलेटर समेत कुल 555 आइसीयू/एचडीयू बेड भी इन अस्पतालों में उपलब्ध हैं। क्वारंटाइन सुविधा के लिए 1184 बेड का और इंतजाम विभिन्न ईएसआइसी अस्पतालों की ओर से किया गया है। इनमें सबसे ज्यादा 444 क्वारंटाइन बेड अलवर (राजस्थान) के ईएसआइसी अस्पताल में उपलब्ध हैं। जबकि बाकी में 400 क्वारंटाइन बेड पटना, 240 गुलबर्गा (कर्नाटक) और 100 बेड कोरबा (छत्तीसगढ़) के ईएसआइसी अस्पताल में उपलब्ध कराए गए हैं।

### विशेष उपचार वाले मामलों में किए जाएंगे अनुबंधित अस्पतालों को रेफर

जिन ईएसआइसी अस्पतालों को कोरोना के इलाज के लिए समर्पित किया गया है, वहां ईएसआइ के बीमित सदस्य कर्मचारियों के सामान्य इलाज की सुविधा नहीं होगी। बीमित कर्मचारियों के सामान्य इलाज के लिए ईएसआइसी ने प्राइवेट अस्पतालों के साथ अनुबंध किए हैं। ऐसे कर्मचारियों को विशेष उपचार वाले मामलों में इन अनुबंधित अस्पतालों को रेफर किया जाएगा। हालांकि आपातकालीन एवं सामान्य चिकित्सा सेवाओं के लिए कर्मचारियों को रिफरल लेटर की जरूरत नहीं पड़ेगी।

### लॉकडाउन के दौरान बीमित कर्मचारियों को सुविधा

लॉकडाउन के दौरान जो लाभार्थी अपनी वार्षिक एकमुश्त रकम जमा नहीं करा पाए हों और जिससे उनके ईएसआइसी बीमा कार्ड का नवीकरण न हो सका हो, वे कर्मचारी भी ईएसआइ एक्ट के नियम 60 एवं 61 के तहत मेडिकल सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। ईएसआइसी ने स्थायी दिव्यांग लाभ एवं आश्रित लाभ के मद में लाभ प्राप्त करने वाले तकरीबन चार लाख लाभार्थियों का पैसा उनके खातों में डाल दिया है।

### नियोक्ताओं को राहत, मई में किया जा सकता है भुगतान

लॉकडाउन के दौरान नियोक्ताओं द्वारा फरवरी का जो योगदान 15 मार्च तक जमा किया जाना था उसकी तारीख अप्रैल अंत तक बढ़ा दी गई है। इसी प्रकार मार्च का भुगतान मई में किया जा सकता है। जिन नियोक्ताओं ने अप्रैल 2019 से सितंबर, 2019 की अवधि का ईएसआई योगदान नहीं जमा किया है उन्हें एक बार की रियायत के तहत अंतिम तारीख के 42 दिनों के भीतर अर्थात 15 मई 2020 तक योगदान जमा करने की छूट दी गई है।

## मास्क के निस्तारण में भी बरतें पूरी सावधानी, धोकर डालें कूड़ेदान में

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ घर में कपड़े से तैयार मास्क का प्रयोग सबसे बेहतर

कोरोना के खिलाफ जंग में मास्क सबसे महत्वपूर्ण हथियार है। इसका इस्तेमाल जितना जरूरी है, उतना ही आवश्यक सही तरीके से उसका निस्तारण भी है। डॉक्टरों के मुताबिक इस्तेमाल के बाद मास्क को गर्म पानी और साबुन से धोने के बाद ही कूड़ेदान में डालें। अन्यथा यह बहुत ही घातक साबित हो सकता है।

केंद्र सरकार लगातार मास्क पहनने की हिदायत दे रही है। महाराष्ट्र समेत कई सरकारों ने इसे पहनना अनिवार्य कर दिया है, लेकिन बाजार में मास्क की कमी के कारण लोग परेशान हैं। डॉक्टरों का कहना है कि जरूरी नहीं कि बाजार से खरीदे मास्क ही पहनें। सबसे अच्छा घर पर कपड़े से तैयार किया गया मास्क है। एन-95 मास्क स्वास्थ्य कर्मियों के लिए ही जरूरी है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. केके अग्रवाल ने कहा कि आम आदमी के लिए सबसे बेहतर है कि घर में तैयार कपड़े का मास्क इस्तेमाल करें। इसे साफ कर दोबारा प्रयोग में लाया जा सकता है।

डॉक्टरों का कहना है कि मास्क के निस्तारण में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। अस्पतालों में ब्लीचिंग पाउडर से संक्रमण मुक्त करने के बाद इसे निस्तारण के लिए भेजा जाता है। घर में जरूरी नहीं कि ब्लीचिंग पाउडर का इस्तेमाल करें। गंगाराम अस्पताल के श्वांस रोग विशेषज्ञ डॉ. बॉबी भलोत्रा ने बताया कि इस्तेमाल किए हुए मास्क को साबुन व गर्म पानी से साफ करने के बाद उसे पॉली बैग में ठीक से पैक करके कूड़ेदान में डालें।

**ऐसे साफ करें मास्क** : सबसे जरूरी है कि अपने पास दो मास्क रखें। ताकि एक को साफ करने के बाद दूसरे का इस्तेमाल कर सकें। इसे साबुन व गर्म पानी से साफ करने के बाद पांच घंटे तक तेज धूप में सुखाएं या फिर आयरन से उसे सुखाएं।

## मुरादाबाद की जेल सैनिटाइज होने के बाद प्रवेश करेंगे बंदी

जासं, मुरादाबाद

मुरादाबाद जिला कारागार में प्रवेश द्वार पर सैनिटाइज टनल बनाते बंदी। (सौजन्य से जेल प्रशासन)

मुरादाबाद की जेल में बंदियों ने खुद ही सैनिटाइजिंग टनल बना दिया है। तीन दिन में बनकर तैयार टनल का ट्रायल सफल रहा। शुक्रवार को टनल शुरू हो जाएगा। इसमें प्लास्टिक की शीट से छत बनी हैं। इसी में स्प्रे लगाया गया है। टनल से ही होकर जेल में प्रत्येक को प्रवेश करने दिया जाएगा। वरिष्ठ जेल अधीक्षक उमेश सिंह ने बताया कि अब कारागार में टनल से सैनिटाइज होकर ही अफसर, कर्मचारी और बंदी प्रवेश करेंगे। कारागार में कोरोना वायरस से बचाव के लिए शासन ने 10 लाख रुपये का बजट भेजा है। इस बजट का उपयोग कोरोना वायरस से सुरक्षा के लिए किया जा रहा है। जिला कारागार के बंदी अभी तक मास्क और सैनिटाइजर बनाने का काम कर रहे थे, लेकिन गुरुवार को बंदियों ने सैनिटाइज टनल का निर्माण पूरा कर दिया। जेल के मुख्य द्वार के अंदर प्रवेश होते ही इस टनल से निकलने वालों को चार स्प्रे सैनिटाइज करेंगे।

**चार फीट चौड़ी, सात फीट लंबी होगी टनल** : जिला कारागार में जिस सैनिटाइज टनल को बनाया गया है। वह चार फीट चौड़ी और सात फीट लंबी है। प्लास्टिक की मोटी शीट से बने इस टनल के अंदर चार फव्वारे लगाए गए हैं। टनल में प्रवेश के साथ ही फव्वारों से सैनिटाइजर निकलने लगेगा। प्रवेश करने वाले को दो से तीन मिनट तक सैनिटाइज होने के लिए टनल में रुकना पड़ेगा। फव्वारा चलाने के लिए एक सिपाही की तैनाती गई है। उत्तर प्रदेश की आठ जेलों में बंदियों ने सैनिटाइज टनल बनेंगे। इनमें गोरखपुर, मेरठ, अयोध्या, आगरा, नोएडा, गाजियाबाद का नाम शामिल है। मुरादाबाद में सैनिटाइज टनल बनकर तैयार है।

## सर्वे ने बताया देश का विचार

## लॉकडाउन के लिए 77 फीसद साथ

भारत में 21 दिनों का लॉकडाउन करीब-करीब पूरा होने को है। देशव्यापी लॉकडाउन कब और कैसे उठाया जाएगा, इसे लेकर केंद्रीय स्तर पर चर्चा की जा रही है। वहीं आम लोगों में यह सर्वाधिक चर्चा का विषय बना हुआ है। ऐसी स्थिति में लोकल सर्कल्स ने देश के लोगों के विचारों को जानने के लिए एक सर्वे किया है। इस सर्वे में देश के 280 जिलों के 11,386 वोट मिले हैं। सर्वे में लोगों से पूछा गया कि भारत सरकार को 15 अप्रैल से लॉकडाउन किस तरह से हटाना चाहिए।

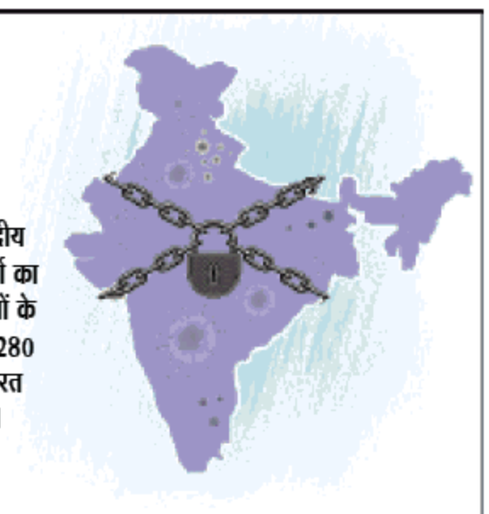

### लॉकडाउन बढ़ाने पर देश की राय

(280 जिलों में)

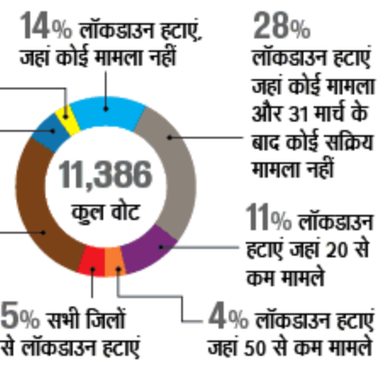


### ये है निष्कर्ष

सर्वेक्षण के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि 77 फीसद लोग चाहते हैं कि वायरस के प्रसार को रोकने के लिए 14 अप्रैल के बाद भी कड़े प्रतिबंध लगाए जाएं। हालांकि सरकारी स्तर पर भी ऐसे ही संकेत मिल रहे हैं। यदि लोग चाहते हैं तो सरकार को भी ऐसा करने में आसानी होगी।

### लॉकडाउन हटाने पर जनता का मत

सर्वे में शामिल 29 फीसद लोगों का मत था कि देशव्यापी लॉकडाउन को 30 अप्रैल तक और 6 फीसद ने 15 मई तक बढ़ाने की बात कही है। इसके अतिरिक्त 14 फीसद ऐसे थे जिन्होंने कहा कि सरकार को सिर्फ ऐसे जिलों से लॉकडाउन हटाना चाहिए जहां पर कोई मामला नहीं है। 28 फीसद का मत था कि सरकार को उन सभी जिलों से लॉकडाउन हटाना चाहिए जहां पर कोई मामला नहीं है और किसी भी जिले में 31 मार्च के बाद कोई सक्रिय मामला सामने नहीं आया है। सर्वे में 11 फीसद चाहते हैं कि सरकार उन सभी जिलों को अनलॉक करे जहां पर 20 से कम मामले हैं, जबकि 4 फीसद ने 50 से कम मामलों वाले जिलों को अनलॉक करने की बात कही है। सर्वे में महज 5 फीसद लोग ऐसे थे जिन्होंने कहा कि मामलों की संख्या की परवाह किए बिना सभी जिलों को 15 अप्रैल से अनलॉक किया जाना चाहिए। 3 फीसद ने अपनी राय नहीं दी।

## चला जाए स्वाद, न आए महक तो हो जाएं सतर्क

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ कोरोना वायरस के संक्रमण का लक्षण हो सकती हैं ये स्थितियां

कोरोना वायरस के संक्रमण का लक्षण बड़ा रहस्य बना हुआ है। विशेषज्ञ भी यकीनी तौर पर कुछ बताने की स्थिति में नहीं हैं। रोज नई-नई बातें सामने आ रही हैं। ज्यादातर पीड़ितों में बुखार, गला खराब व खांसी होने की समस्या देखी जा रही है। यह बात भी सामने आ रही है कि संक्रमण होने पर स्वाद और सूंघने की क्षमता पर भी असर पड़ता है। हालांकि कई अन्य बीमारियों में भी स्वाद खराब हो जाता है और किसी चीज की महक पता नहीं चलता, लेकिन दोनों स्थितियों में अंतर है।

डॉक्टरों का कहना है कि सामान्य बीमारियों में दवा के इस्तेमाल के बाद यह समस्या आती है, लेकिन कोरोना में यह पहले ही हो जाता है। गंगाराम अस्पताल के चेस्ट फिजिशियन डॉ. बॉबी भलोत्रा ने बताया कि बुखार, सूखी खांसी, गला खराब होना, छाती में दर्द व सांस लेने में परेशानी इसके प्रमुख लक्षण देखे जा रहे हैं। कई शोधों में यह बात सामने आ चुकी है कि संक्रमित व्यक्ति में स्वाद व सूंघने की क्षमता प्रभावित होती है। यह लक्षण सबसे पहले आता है।

**कुछ मामलों में 25 दिन तक पाया गया इंक्यूबेशन पीरियड** : डॉ. बॉबी भलोत्रा ने कहा कि सामान्य तौर पर दो से 14 दिन तक इसका इंक्यूबेशन पीरियड माना गया है। यानी कोई व्यक्ति संक्रमित होने के 14 दिन तक दूसरों में बीमारी फैला सकता है। लेकिन कुछ मामलों में इंक्यूबेशन पीरियड 25 से 28 दिन तक देखा गया है। कई लोगों में बीमारी के लक्षण सामने नहीं आ पाते। वे देखने में स्वस्थ लगते हैं, लेकिन वायरस के वाहक के रूप में कार्य करते हैं। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. केके अग्रवाल ने कहा कि इंक्यूबेशन पीरियड 14 दिन माना गया है, लेकिन कुछ मामलों में नए तथ्य सामने आए हैं।

**किसी को हल्का तो कुछ को तेज बुखार** : अपोलो अस्पताल के श्वांस रोग विशेषज्ञ डॉ. राजेश चावला ने कहा कि सिर्फ 15 फीसद मरीज को ही ऑक्सीन की जरूरत पड़ रही है। इनमें ज्यादातर बुजुर्ग होते हैं। कोरोना से पीड़ित कुछ लोगों में 99 व 100 डिग्री फारेनहाइट बुखार देखा जा रहा है।

## तकनीक की मदद से प्रवासी बिहारियों का सहारा बन रहा बिहार फाउंडेशन

ओमप्रकाश तिवारी, मुंबई

बिहार सरकार से संबंधित संस्था बिहार फाउंडेशन इन दिनों बिहार के प्रवासियों के लिए न सिर्फ महाराष्ट्र, बल्कि पूरे देश में वरदान साबित हो रही है। करीब 10 राज्यों में लॉकडाउन के कारण अटके बिहार के लोगों को तकनीक की मदद से राशन एवं आर्थिक मदद आदि पहुंचाई जा रही है।

बिहार फाउंडेशन के सीईओ भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी आरएस श्रीवास्तव एक घटना का उदाहरण देते हुए बताते हैं कि पुणे में फंसे किसी व्यक्ति का मदद के लिए फोन आया। उसे राशन की जरूरत थी, लेकिन वह मोबाइल तकनीक से ज्यादा परिचित नहीं था। उसे नजदीकी राशन की दुकान तक जाने के लिए कहा गया। बिहार फाउंडेशन के कार्यकर्ता के कहने पर दुकानदार ने जरूरतमंद व्यक्ति की फोटो खींचकर उसके आधार नंबर और अपने बिल के साथ कार्यकर्ता को भेज दिया। कुछ मिनटों में ही दुकानदार के खाते में भीम एप के जरिये 788 रुपये पहुंच गए और दुकानदार ने इतनी कीमत का राशन जरूरतमंद व्यक्ति को सौंप दिया। इसी प्रकार जो व्यक्ति मोबाइल तकनीक का उपयोग करना जानता है उसे फाउंडेशन के कार्यकर्ता बिहार सरकार द्वारा शुरू किए गए आपदा मदद एप के जरिये पूरे 1000 रुपये की मदद चंद मिनटों में पहुंचाते हैं। श्रीवास्तव ने कहा कि बुधवार शाम तक आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से देश भर में फंसे बिहार के प्रवासी श्रमिकों तक 10 करोड़, 35 लाख रुपये की मदद पहुंचाई जा चुकी है। श्रीवास्तव कहते हैं कि कोरोना जैसी आपदा के समय में दो चीजें सीखने को मिलीं। एक तो वस्तुओं का विकेंद्रीकरण होना जरूरी है। दूसरा तकनीक का उपयोग बढ़ाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से भुगतान का आश्वासन दिए जाने के बावजूद जब बड़े-बड़े स्टोर्स ने राशन आपूर्ति में असमर्थता जता दी, तो गली-नुक्कड़ के परचून दुकानदार काम आए। इन्हीं से राशन लेकर आज बिहार फाउंडेशन देश भर में प्रतिदिन 30,000 लोगों को भोजन करवा रहा है और प्रतिदिन 2000 पैकेट राशन (एक पैकेट में 21 दिन का निर्धारित राशन होता है) बंटवा पा रहा है। इसी प्रकार तकनीक की मदद से 10 राज्यों में बैठे अपने 500 कार्यकर्ताओं के साथ यह संगठन राहत कार्यों का बेहतर संयोजन कर रहा है।

यह मुहिम बिहार फाउंडेशन से जुड़े कार्यकर्ताओं एवं बिहार मूल के धनाढ्य लोगों को मदद के लिए प्रेरित कर रही है। अन्य राज्यों में फंसे बिहारी श्रमिकों की मदद के लिए आपदा प्रबंधन विभाग एवं मुख्यमंत्री सहायता कोष सामने आ रहा है। फाउंडेशन के मुंबई चैप्टर के चेयरमैन अभय कुमार के अनुसार लॉकडाउन शुरू होने के बाद से धारावी में चल रहा प्रवासी किचन प्रतिदिन 1000 प्रवासी श्रमिकों को भोजन उपलब्ध करा रहा है। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर महाराष्ट्र सरकार से भी बात कर इधर-उधर फंसे श्रमिकों को मदद मुहैया करा रहा है।

**जनमत**

**मुद्दा**

क्या कोरोना की जंग में अनमोल मानव संसाधनों को बचाकर हम फिर से अपने आर्थिक नुकसान की भरपाई आसानी से करने में सक्षम होंगे?

mudda@jagran.com पर आप अपनी राय हमें भेज सकते हैं।

## बच्चों की भावनात्मक अस्थिरता को समझें

**कोरोना से कैसे लड़ें मनोवैज्ञानिक की सलाह**

**डॉ. प्रीति सिंह**
क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट, पारस अस्पताल

दिल्ली की ज्योति अजमेरा वर्किंग हैं। बेटा नौवीं कक्षा में पढ़ता है और बेटी दसवीं में। ज्योति को इस वक्त ऑफिस व घर के काम से ज्यादा बच्चों के बीच विवाद और उनकी कड़वी बातें परेशान कर रहीं हैं। मनोवैज्ञानिकों के मुताबिक इस माहौल के लिए हालात के सिवा कोई भी जिम्मेदार नहीं है। ऐसे में थोड़ा धैर्य रखकर माता-पिता बच्चों के नकारात्मक भावनाओं को संभाल सकते हैं और परिवार के लिए शांतिपूर्ण माहौल बना सकते हैं। इस बारे में पारस अस्पताल की क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट डॉ. प्रीति सिंह ने बताया कि बच्चों की भावनाओं को समझते हुए उन्हें मनमाफिक माहौल व उनका स्पेस देकर उनसे दोस्ती की जा सकती है।

### मूड स्विंग को समझें

किशोरावस्था में हार्मोनल बदलावों की वजह से बच्चों में चिडचिड़ापन आ जाता है। इस अवस्था में भावनात्मक उतार-चढ़ावों और अस्थिरता आ जाती है जिसे वे स्वयं आम दिनों में भी हैंडल नहीं कर पाते और बात-बात पर गुस्सा हो जाते हैं। अब इस होम आइसोलेशन में उनमें भावनात्मक अस्थिरता बढ़ेगी तो अभिभावकों को यह चाहिए कि उनकी भावनाओं को समझें। उन्हें बात-बात पर डांटें नहीं बल्कि उनकी समस्याओं को सुनकर उन्हें समझने का प्रयास करें।

### बच्चों को दें स्पेस

आमतौर पर माता पिता बच्चों पर पूरी निगरानी रखते हैं। उनके पीछे-पीछे लगे रहते हैं, उनकी गतिविधियों पर नजर रखते हैं। इस होम आइसोलेशन में बच्चे अपने दोस्तों से नहीं मिल पा रहे हैं, पार्टी नहीं कर पा रहे हैं, खेल नहीं पा रहे हैं तो उनकी कुंठा और बढ़ रही है। उन्हें इस वक्त में थोड़ा अलग से स्पेस दें। उन्हें जो करना है करने दें, दोस्तों से फोन पर बात करने से न रोकें।

### इंटरनेट उपयोग पर रोक टोक न करें

किशोरों के पास अभी मनोरंजन के लिए इंटरनेट के अलावा कोई साधन नहीं है। उन्हें इंटरनेट का उपयोग करने पर आम दिनों की तरह पाबंदी न लगाएं। हां, नजर जरूर रखें कि कहीं वे साइबर क्राइम के जाल में तो नहीं फंस रहे हैं।

### उनसे करें दोस्ती

बच्चों से दोस्ती करने का इससे बेहतर समय और अवसर नहीं मिलेगा। उनके दोस्तों, उनकी परेशानियों पर रसोई में उनसे मदद लेते हुए बात करें। काम का बोझ भी कम होगा, बच्चों में स्किल्स भी विकसित होंगी। मूड भी संतुलित हो सकेगा।

● प्रस्तुति: गुरुग्राम से प्रियंका दुबे मेहता

**सलाह**

अमेरिका से हापुड़ की प्रियंका ने दैनिक जागरण से फोन पर साझा किए कोरोना से लड़ने के अनुभव, कहा-अद्भुत है, पीएम मोदी का पूरे देश में एक साथ लॉकडाउन का फैसला

## समझदार बनें, घर में रहें और लक्ष्मण रेखा न लांघें

मनोज त्यागी, हापुड़

'भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह से कोरोना वायरस से जंग जीतने के लिए पूरे देश में एक साथ लॉकडाउन किया है। यह अद्भुत है। हम न्यूयार्क से तीन सौ किमी दूर रोचेस्टर में रहते हैं। हम 15 मार्च से अपने घर में लॉकडाउन हैं। घर से बाहर कदम नहीं रखा है। इसलिए हम सुरक्षित हैं। सभी सुविधाएं होने के बाद भी यहां कई लोग संक्रमित पाए गए हैं। जबकि अभी तक 34 से ज्यादा की मौत हो चुकी है। अभी भी यहां लगातार संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ रही है और मौतें भी हो रहीं हैं।

भारत में अभी भी कुछ लोग कोरोना का मजाक उड़ा रहे हैं। उन्हें यह नहीं मालूम कि कोरोना अमीर-गरीब, धर्म-जात नहीं देखता।' यह बातें हापुड़ निवासी प्रियंका ने पर फोन दैनिक जागरण से कहीं। आगे कहा कि हमें जब घर में बोरियत होती है तो घर की खिड़की से दूसरी ओर देखकर मन को खुश कर लेते है। लेकिन किसी भी हाल में लक्ष्मण रेखा का उलंघन नहीं करते हैं। अमेरिका में लॉकडाउन है, लेकिन जरूरत के सामान की सभी दुकानें हर समय खुली रहती हैं। यही कारण है कि यहां लगातार कोरोना के मामले सामने आ रहे हैं।

**पीएम मोदी को दिया धन्यवाद** : प्रियंका ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने किसी की परवाह किए बिना पूरे देश को एक साथ लॉकडाउन किया है। पूरे देश को एक साथ लॉकडाउन का असर इससे भी देखा जा सकता है कि भारत में अमेरिका की तरह मामले नहीं बढ़ रहे हैं। जबकि अमेरिका में भारत के मुकाबले सभी सुविधाएं बेहतर हैं। लॉकडाउन से सभी एक दूसरे से दूर हो गए और कोरोना को दूसरों के संपर्क में आने का मौका नहीं मिला।

**तुरंत नहीं उठाते हैं सामान** : अमेरिकी सरकार ने 24 घंटे बिजली और पानी की सुविधा दे रखी है। घर के सभी सामान ऑनलाइन मिल जाते है। यह बात जरूर है कि सामान आने में एक सप्ताह का समय लग जाता है। बहुत जरूरी सामान होता है तो 24 घंटे में भी मिल जाता है। घर में आने वाले सूखे सामान को तो कम से कम दस घंटे घर के बाहर ही रखते हैं। जो गीला सामान होता है उसे सीधे नहीं उठाते हैं, बल्कि उसे उठाने से पहले हाथों में ग्लव्स पहनते हैं, फिर सामान को सैनिटाइज किया जाता है। इसके बाद फ्रिज में रखते हैं। अधिकांश लोग वर्क फ्राम होम ही कर रहे हैं। इसके बाद भी कोरोना वायरस का आतंक समाप्त नहीं हो रहा है।

**प्रतिदिन घर वालों का जानती हूं हाल** : कहा कि घर वालों से बात कर उनका प्रतिदिन हाल जानती हूं और उनसे लगातार हाथ सैनिटाइज करने, घर से बाहर न निकलने के लिए कहती हूं। साथ ही उनसे यह भी कहती हूं कि दूसरे लोगों को फोन करके उनसे भी आग्रह करें कि वह भी घर के अंदर ही रहें। तभी इस कोरोना से जंग जीती जी सकती है।

जो लोग कोरोना की मार को नहीं समझ रहे हैं। वह समझदार बनें। एक साथ इकट्ठा हो रहे हैं। वह एक साथ इकट्ठा न हों। कम से कम छह फीट की दूरी बनाकर रखें। हाथों को कई बार सैनिटाइज करें। यही कोरोना का इलाज है।

– प्रियंका, रोचेस्टर (अमेरिका) से फोन पर

अमेरिका के रोचेस्टर में रह रहीं उत्तर प्रदेश के हापुड़ निवासी प्रियंका। सौ. प्रियंका

## आइआइटी भिलाई ने तैयार की किफायती पीपीई किट

**नईदुनिया, रायपुर:** छत्तीसगढ़ में स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी) भिलाई ने महज 350 रुपये में पर्सनल प्रोटेक्शन इक्यूपमेंट (पीपीई) किट तैयार कर दी है। कोरोना पॉजिटिव मरीजों का इलाज कर रहे स्वास्थ्यकर्मी इसका दोबारा भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे खुद को सिर से सीने तक कवर (ढका) किया जा सकता है।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग ने जो किट तैयार की है, उसमें कोरोना वायरस को रोकने का भी दावा किया जा रहा है। संस्थान के निदेशक रजत मूणा का कहना है कि हमने जो किट बनाई है, उसे एक बार इस्तेमाल करने के बाद दूसरी बार भी इस्तेमाल (रि-यूल्ड) कर सकते हैं। आइआइटी भिलाई ने इस किट की जानकारी केंद्रीय विज्ञान एवं प्राद्योगिकी मंत्रालय को भी दी है। आइआइटी भिलाई ने मंत्रालय को जानकारी दी है कि इस किट का इस्तेमाल डॉक्टर, नर्सिंग स्टॉफ और खासकर ऐसे स्वास्थ्यकर्मी, जोकि कोरोना पॉजिटिव मरीजों का इलाज कर रहे हैं, उनके लिए फायदेमंद है।

**यह है विशेषता** : इसमें एन-95 मॉस्क में इस्तेमाल होने वाला फिल्टर लगा हुआ है। यह सिर से सीने तक व्यक्ति को कवर कर सकती है। यह शुद्ध हवा भीतर जाने देती है और वायरस को रोकती है। इसको पहनने पर सांस लेने में किसी भी तरह की दिक्कत नहीं होती है। यहां जो किट बनाई गई है, वह दो टाइप की है। पहली हेलमेट टाइप पीपीई किट है, जिसकी कीमत 200 रुपये है और यह चेहरे को ढक लेती है। इसी तरह दूसरी फेस सील टाइप पीपीई किट है, जिसकी कीमत 350 रुपये है।